गांधीवादी विचारधारा →

सत्याग्रह → गांधी के आंदोलनों का सैद्धान्तिक आधार सत्य और अहिंसा पर आधारित था। सत्य और अहिंसा का अटूट सम्बन्ध ही सत्याग्रह के विचार को जन्म देता है।

→ अहिंसा निर्बल व्यक्ति का आश्रय नहीं बल्कि शक्तिशाली का अस्त्र है। विरोधी की शक्ति से डरकर या अपनी विवशता का अनुभव करते हुए प्रतिकार न करना अहिंसा नहीं है, वह कायरता है। अहिंसा स्वयं एक शक्ति है जिसे विरोधी के हृदय पर विजय प्राप्त की जाती है। यह भौतिक शक्ति को आध्यात्मिक शक्ति के आगे झुकाने की कला है। गांधीवादी अहिंसा की यह प्रवृत्ति व्यापारी वर्ग, कृषकों, स्थानीय लोगों, को भी आकर्षित कर रही थी।

→ सत्याग्रह गांधी के विचारधारा का मूल तत्व है। सत्याग्रह का अर्थ है सत्य + आग्रह अर्थात सत्य पर कायम रहना चाहे जितनी भी बाधायें या यातनायें क्यों न सहनी पड़े। वस्तुतः अहिंसा के माध्यम से असत्य पर आधारित बुराई का विरोध करना ही सत्याग्रह है सत्याग्रही को स्वयं सत्य पर दृढ़ रहकर अपने विरोधी को यह महसूस करवाना है कि उसका मार्ग असत्य व बुराई का मार्ग है। ज्यों ही उसे इस तथ्य का पता लगेगा वह स्वतः ही बुराई छोड़कर भलाई की ओर अग्रसर हो जायेगा। इसे ही गांधी जी ने हृदय परिवर्तन कहा है। सत्याग्रही को अहिंसक बने रहना है किन्तु विरोध बराबर जारी रखना चाहिये। इस तरह गांधी की सत्याग्रह सम्बन्धी विचारधारा का मूल स्रोत अहिंसा का सिद्धान्त है।

→ सत्याग्रही को अनेक साध्यों का प्रयोग करना पड़ता है। ये मुख्य साधन है - हड़ताल, धरना, प्रदर्शन, बहिष्कार, असहयोग, सविनय अवज्ञा आदि।

→ गांधी ने निष्क्रिय प्रतिरोध से ज्यादा महत्व सत्याग्रह को दिया। उनके अनुसार निष्क्रिय प्रतिरोध का अर्थ है विरोधी को डराने का प्रयत्न जबकि सत्याग्रही का तात्पर्य है 'हृदय परिवर्तन'। निष्क्रिय प्रतिरोध में सत्याग्रही की आत्मिक शक्ति नहीं है। इस तरह निष्क्रिय प्रतिरोध हमारी कमजोरी का भी फल हो सकता है जबकि सत्याग्रह हमारी निर्भयता का द्योतक है।

साधन - साध्य की पवित्रता → गांधी ने राजनीति और नैतिकता के निकट सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिये साधन एवं साध्य दोनों की पवित्रता पर बल दिया। जैसे साधन होंगे वैसा ही साध्य होगा। साधन की

Scanned by CamScanner

तुलना बीज से की जाती है जबकि साध्य की वृक्ष से। बीज से ही वृक्ष की उत्पत्ति होती है और वृक्ष की प्रकृति भी बीज की प्रकृति के अनुरूप होती है। यदि साधन अनैतिक होंगे तो साध्य चाहे कितना भी नैतिक क्यों न हो वे इसे निश्चय ही भ्रष्ट कर देंगे। स्वराज्य प्राप्ति के लिये गांधी जी ने सत्याग्रह का मार्ग दिखाया क्योंकि सत्याग्रह ऐसा साधन था जो साध्य अर्थात स्वराज के समान ही पवित्र था। यदि हिंसा, छल कपट और असत्य के मार्ग पर चलकर स्वराज मिल भी जाता तो वे उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। यही वजह है कि 1922 के चौरी चौरा कांड से असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया।

मार्क्स की संपत्ति

वर्ग समन्वय → वर्ग समन्वय पर गांधी जी ने विशेष बल दिया तथा इसी वर्ग समन्वय के माध्यम से स्वतन्त्रता प्राप्ति का लक्ष्य निर्धारित किया।

सर्वोदय → गांधी जी राजनैतिक धारणाओं का मूल आधार 'सर्वोदय' था। सर्वोदय का अर्थ है "सबकी समान उन्नति"। एक व्यक्ति का भी उतना ही महत्व है जितना अन्य व्यक्तियों का सामूहिक रूप से। सर्वोदय का यह सिद्धान्त बेंथम, मिल के उपयोगितावादी सिद्धान्त के विपरीत था जिसके अनुसार "अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख" कहा गया

धर्म की भूमिका → गांधी जी के विचारों में राजनीति के लिये धर्म को महत्वपूर्ण माना गया है जबकि मार्क्स धर्म को अफीम घोषित कर उसका विरोध करता है। परन्तु गांधी के धर्म का तात्पर्य उस व्यवस्था से था जो नैतिकता, सदाचार और अनुशासन सिखाती है। गांधी जी के धर्म के महत्व को हम रामराज्य जैसी परिकल्पना में देख सकते हैं।

Scanned by CamScanner

आर्थिक सिद्धान्त →

→ गांधी ने ट्रस्टीशिप सिद्धान्त (न्यासिता का सिद्धान्त) का प्रतिपादन किया जिसके अनुसार संपत्ति का स्वामित्व निजी होते हुए भी उसके स्वामी उसे सार्वजनिक उपयोग के लिये सुलभ बनाए। ट्रस्टीशिप सिद्धान्त औद्योगिक पूँजीवादी शोषण के विरोध में था। यह सिद्धान्त मालिक-मजदूर के सहयोग पर निर्भर था और भारतीय जमींदार पूँजीपति वर्ग को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था।

→ गांधी ने आधुनिक औद्योगिकीकरण की आलोचना की। उनके अनुसार मशीनीकरण भारत को पीछे धकेल रहा है। वस्तुतः गांधी भारत में लघु एवं कुटीर उद्योगों के समर्थन में ऐसा कह रहे थे। क्योंकि भारत की 80% आबादी गाँवों में रहती थी और अंग्रेजों की व्यापारिक नीति से हस्तशिल्प उद्योगों का पतन हो गया था। इस तरह गांधी का आधुनिक औद्योगिकीकरण के विरुद्ध प्रचार उन लोगों को आकर्षित कर रहा था जो इस औद्योगिकीकरण में पिछड़ रहे थे

सामाजिक सिद्धान्त →

→ गांधी ने आदर्श समाज की स्थापना पर बल दिया जिसमें आनुवंशिक ऊँच-नीच का भाव, अस्पृश्यता, छुआछूत, स्त्री-पुरुष का भेद न हो। गांधी के अनुसार जब तक अस्पृश्यता का समूल नष्ट नहीं कर दिया जायेगा तब तक भारतीय समाज उन्नति नहीं करेगा। फलतः उन्होंने अछूतोद्धार पर विशेष बल दिया

→ गांधी ने स्त्री पुरुष समानता पर बल दिया जिसमें ~~जन्मजात ऊँच-नीच का भाव~~ और कहा कि देश की आधी जनसंख्या निष्क्रिय तथा निष्प्राण कर देने से देश का विनाश हो जायेगा। अतः उन्होंने सभी क्षेत्रों में स्त्रियों की भागीदारी पर बल दिया। गांधी का यह सामाजिक सिद्धान्त समाज के बहुसंख्यक तबके को आकर्षित कर रहा था।

→ गांधी ने वर्णव्यवस्था का समर्थन किया परन्तु जन्म आधारित न होकर कर्म आधारित। ऐसी व्यवस्था में ऊँच-नीच का भाव न हो अपितु सभी का सभी कर्मों के प्रति समर्पण व सद्भाव हो

Scanned by CamScanner

शिक्षा सम्बन्धी →

गांधी के अनुसार शिक्षा आत्म साक्षात्कार या ध्येय को पहचानने की कला है। गांधी ने अंग्रेजी शिक्षा पद्धति की आलोचना की तथा मातृभाषा में शिक्षा पर बल दिया। शिक्षा को कौशल एवं उत्पादन से संबंधित करने की बात कही। गांधी का यह शिक्षा सिद्धान्त बेसी शिक्षा या बुनियादी शिक्षा के नाम से जाना जाता है। अतः यह शिक्षा सिद्धान्त समाज के सभी वर्गों को आकर्षित कर रहा था।

Scanned by CamScanner

गांधीवादी आन्दोलन की कार्यपद्धति (रणनीति)

① **आन्दोलन के सक्रिय तथा निष्क्रिय दौर में विश्वास तथा कार्य :-** गांधी के अनुसार कोई भी जनान्दोलन लगातार काफी समय तक नहीं चल सकता। इसमें एक ठहराव का दौर आता है। इसका मूल कारण है जनता की दमन सहने और बलिदान करने की शक्ति असीम नहीं होती। अतः इस निष्क्रिय दौर में रचनात्मक कार्य करने चाहिये जिससे जनता स्वावलम्बी बने, गतिशीलता जारी रहे तथा जनता अगले आंदोलन के लिये ऊर्जा प्राप्त कर सके।

② **दबाव - समझौता - दबाव की रणनीति :** गांधी ने संघर्ष से ज्यादा समझौते पर बल दिया। वस्तुतः जनान्दोलन के माध्यम से शत्रु पर दबाव डालकर उसे समझौते के लिये तैयार करने की नीति अपनाई तदुपरांत शेष रह गये उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये पुनः जनान्दोलन छेड़ शत्रु पर दबाव बनाना और उसे पुनः समझौते के लिये तैयार करना था। जनान्दोलन को वापस लेना और फिर शुरू करना गांधी की इसी रणनीति का एक पहलू रहा।

③ **जनता की केन्द्रीय भूमिका पर बल →** राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान गांधी ने जनता की शक्ति को पहचाना और आन्दोलन में जनसहभागिता पर बल दिया। इस प्रकार जनता को राजनीतिक रूप से सक्रिय कर साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में उसका समर्थन प्राप्त किया।

④ **नियंत्रित जनांदोलन →** गांधी जी आंदोलन को एक निश्चित दायरे में ही रखना चाहते थे जो उनके तय किये मानकों पर कायम रहे। यह मानक था सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह का। वस्तुतः गांधी जी इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि अनियंत्रित आंदोलन सभी वर्गों की भागीदारी को हतोत्साहित करेगा और साम्राज्यवादी सत्ता को इसका दमन करने में आसानी होगी।

⑤ **साधारण राजनीतिक शैली →** गांधी ने अपनी नीतियों एवं उद्देश्यों को अमलीजामा पहनाने के लिये साधारण राजनीतिक जीवन शैली को अपनाया। तीसरे दर्जे में यात्रा करना, सरल भाषा का प्रयोग, साधारण वस्त्र (विशेषकर लंगोट) पहनना, लोगों के बीच रामचरितमानस एवं गीता की उक्तियों का प्रयोग इत्यादि ने जनता के बीच गांधी को लोकप्रिय बना दिया। जनता ने उन्हें अपना स्वाभाविक नेता मानकर अपना नेतृत्व सौंप दिया। यह शैली गांधी से पूर्व के राजनीतिक नेताओं में दिखाई नहीं पड़ती।

Scanned by CamScanner

⑥ रचनात्मक कार्य → गांधी ने सर्वसमावेशी नीति अपनाई तथा हिन्दु-मुस्लिम एकता, हरिजनोद्धार कार्यक्रम, स्त्री पुरुष समानता, नारी उत्थान पर बल दिया।
→ कताई - बुनाई, खादी तथा चरखा जैसे कार्यों पर बल दिया
→ पिछड़ी और आदिवासी जातियों के बीच कार्य कर उसे शिक्षित करना, लोगों को रचनात्मक कार्य के लिये प्रेरित करना
→ इस तरह गांधी के रचनात्मक कार्य बहुमुखी थे। गाँव की गरीब जनता को इससे राहत मिली और गांधी की स्वीकृति बढ़ी। इन रचनात्मक कार्यों से देश में नवनिर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई।
→ कुल मिलाकर ये रचनात्मक कार्य स्वाधीनता संघर्ष के लिये सिपाही तैयार करने एवं भविष्य के नेतृत्व के लिये उन्हें प्रशिक्षित करने में मददगार साबित हुए।

Scanned by CamScanner